इंटरनेट की दुनिया में नन्हे कदम

माता-पिताओं को क्या जानने की ज़रूरत है

कुछ समय तक लोगों का मानना था कि अगर माता-पिता कंप्यूटर को घर की बैठक या किसी खुली जगह में रखें, तो वे अपने बच्चों को इंटरनेट के खतरों से बचा सकते हैं। वे सोचते थे कि इससे बच्चे खतरनाक या गलत किस्म की वेब साइटों पर नहीं जाएँगे। हालाँकि आज भी ऐसा सोचना सही है, मगर एहतियात के तौर पर सिर्फ यह कदम उठाना काफी नहीं। वह क्यों? क्योंकि आज मोबाइल फोन जैसे बिना तार के कई यंत्र पाए जाते हैं, जिनके ज़रिए बच्चे जब चाहें, जहाँ चाहें इंटरनेट का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके अलावा, जगह-जगह पर इंटरनेट कैफे पाए जाते हैं। कई लाइब्रेरियों में भी इंटरनेट की सुविधा पायी जाती है। कहीं नहीं तो बच्चे अपने उन दोस्तों के घर जाकर इंटरनेट इस्तेमाल करते हैं, जिनके यहाँ कंप्यूटर है। जब इंटरनेट इस्तेमाल करने के इतने ढेरों तरीके मौजूद हैं, तो ज़ाहिर-सी बात है कि माँ-बाप के लिए अपने बच्चों पर नज़र रखना एक चुनौती हो सकती है।

आइए कुछ ऐसी इंटरनेट सेवाओं पर गौर करें, जो बच्चों के मन को लुभाती हैं। साथ ही, यह भी देखें कि उनमें क्या-क्या खतरे हैं।

ई-मेल

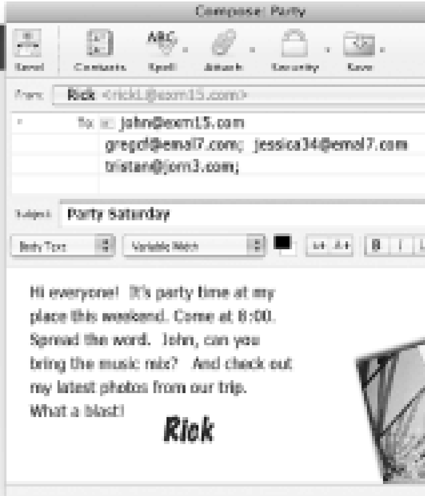

यह क्या है? इंटरनेट के ज़रिए भेजा जानेवाला लिखित संदेश।

क्यों लुभाता बच्चों का मन? ई-मेल के ज़रिए हम झटपट अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को संदेश भेज सकते हैं और उनका जवाब पा सकते हैं। और यह किफायती भी है।

खतरों से रहिए खबरदार! आपको कई अनचाहे ई-मेल मिल सकते हैं, जिन्हें अकसर 'स्पैम' कहा जाता है। इस तरह के ई-मेल न सिर्फ नाक में दम कर देते हैं, बल्कि इनमें गंदी जानकारी दी होती है या फिर खुल्लम-खुल्ला सेक्स के बारे में बताया जाता है। कई बार ई-मेल में ऐसे लिंक होते हैं, जिन पर क्लिक करके ई-मेल पढ़नेवाले, यहाँ तक कि भोले-भाले बच्चे ऐसे दस्तावेज़ों में जा सकते हैं, जहाँ उन्हें अपने बारे में जानकारी देने के लिए उभारा जाता है। नतीजा, उनकी निजी जानकारी चुरायी जा सकती है। इस तरह के ई-मेल का जवाब देना, यहाँ तक कि ऐसे ई-मेल दोबारा न भेजने के लिए सख्ती से मना करना भी मुसीबत को दावत देना है। वह कैसे? ऐसे ई-मेल का जवाब देने से उनके भेजनेवालों को मालूम चल जाता है कि आपका ई-मेल पता काम कर रहा है और वे आपको बेसिरपैर के संदेश भेजने लग सकते हैं।

■ भारत में इंटरनेट का इस्तेमाल करनेवालों की गिनती में एक बड़ा उछाल आया है। एक साल के अंदर उनकी गिनती करीब 54 प्रतिशत बढ़ गयी है और इनमें ज़्यादातर बच्चे हैं

वेब साइट

यह क्या है? इलेक्ट्रॉनिक पेजों का संग्रह। तरह-तरह के संगठन, स्कूल-कॉलेज, कंपनियाँ और अलग-अलग लोग वेब साइटें तैयार करते हैं। यही नहीं, वे इन साइटों में ताज़ा-तरीन जानकारी भी भरते रहते हैं।

क्यों लुभाता बच्चों का मन? आजकल ऐसी लाखों वेब साइट मौजूद हैं, जिन पर जाकर नौजवान मनचाही खरीदारी कर सकते हैं, किसी भी विषय पर खोजबीन कर सकते हैं और दोस्तों से मेल-जोल रख सकते हैं। साथ ही, वे इन साइटों पर जी-भरकर गेम खेल सकते हैं और संगीत सुन सकते हैं, या फिर उन्हें डाउनलोड कर सकते हैं।

खतरों से रहिए खबरदार! कई बदचलन लोग, वेब साइटों का गलत इस्तेमाल करते हैं। बहुत-सी वेब साइटों पर लोगों को लैंगिक संबंध रखते हुए दिखाया जाता है। और ऐसी साइटों पर अकसर लोग इत्तफाक से पहुँच जाते हैं। मिसाल के लिए, अमरीका में जब 8 से 16 साल के बच्चों का सर्वे लिया गया, तो उनमें से 90 प्रतिशत का कहना था कि वे अनजाने में पोर्नोग्राफी की साइटों पर पहुँचे हैं। और ज़्यादातर मामलों में उनके साथ ऐसा तब हुआ जब वे इंटरनेट पर अपना होमवर्क कर रहे थे।

यही नहीं, ऐसी कई वेब साइटें भी हैं, जो जवानों को जुआ खेलने का बढ़ावा देती हैं। कनाडा में जब 10वीं और 11वीं क्लास में पढ़नेवाले लड़कों का सर्वे लिया गया, तो हर 4 में से 1 ने कबूल किया कि वह ऐसी साइटों पर गया है। यह जानकार लोगों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है, क्योंकि जो कोई एक बार इंटरनेट पर जुआ खेलता है, उसे इसकी लत लग जाती है। इसके अलावा, कुछ वेब साइटें "एनोरेक्सिया" का बढ़ावा देती हैं।* (एनोरेक्सिया एक ऐसी बीमारी है, जिसके शिकार लोगों को हरदम मोटे होने का डर लगा रहता है। इसलिए वे बहुत ही कम खाना खाते हैं।) कुछ वेब साइटें ऐसी भी हैं, जो छोटे-छोटे धर्म या जाति के लोगों के खिलाफ नफरत की आग भड़काती हैं। कुछ साइटें तो बम बनाने, ज़हर तैयार करने और आतंकवादी हमलों की योजना बनाने की तरकीबें सुझाती हैं। और-तो-और, आजकल इंटरनेट पर जो गेम पेश किए जाते हैं, उनमें मार-काट और खून-खच्चरवाले सीन भरे पड़े होते हैं।

---

* ऐसी कई वेब साइटों और संगठनों का दावा है कि वे एनोरेक्सिया का बढ़ावा नहीं देते। लेकिन सच पूछिए तो इनमें से कुछ साइटें और संगठन, एनोरेक्सिया को एक बीमारी नहीं बताते। इसके बजाय, उनका कहना है कि यह जीने का एक तरीका है, जिसे चाहे तो एक इंसान चुन सकता है। इतना ही नहीं, इन साइटों पर ऐसी चर्चाएँ रखी जाती हैं, जिनमें इस बात पर नुस्खे दिए जाते हैं कि एक शख्स अपना असली वज़न और कम खाने की अपनी आदत अपने माँ-बाप से कैसे छिपा सकता है।

चैट रूम

यह क्या है? ऐसी वेब साइट जिसमें लोग संदेश टाइप करके एक-दूसरे से बात करते हैं। आम तौर पर यह बातचीत किसी शौक या खास विषय को लेकर होती है।

क्यों लुभाता बच्चों का मन? आपका बच्चा ऐसे कई लोगों से बातें कर सकता है, जिनसे शायद ही वह कभी मिला हो, मगर जिनके शौक एक-जैसे हैं।

खतरों से रहिए खबरदार! चैट रूम का इस्तेमाल अकसर ऐसे लोग करते हैं, जो मासूम बच्चों को अपनी हवस का शिकार बनाने की फिराक में रहते हैं। उनका इरादा होता है, किसी बच्चे को फुसलाना ताकि वे उसके साथ इंटरनेट पर या आमने-सामने मिलकर लैंगिक संबंध रख सकें। इस सिलसिले में, *आखिर इंटरनेट पर आपके बच्चे कर क्या रहे हैं?* (अँग्रेज़ी) किताब की एक लेखिका के अनुभव पर गौर कीजिए। जब वह इस बात पर खोजबीन कर रही थी कि इंटरनेट का सावधानी से कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है, तो उसने एक बार इंटरनेट पर खुद को 12 साल की लड़की बताया। इसके बाद क्या हुआ, इस बारे में किताब कहती है: "फौरन एक व्यक्ति ने उसे प्राइवेट चैट रूम में आने के लिए कहा। (प्राइवेट चैट रूम में सिर्फ गिने-चुने लोग जा सकते हैं।) इस पर उस लेखिका ने बताया कि उसे प्राइवेट चैट रूम में जाना नहीं आता। तब उस व्यक्ति ने लेखिका को प्राइवेट चैट रूम में आने में मदद दी। आखिर में, उसने लेखिका से पूछा कि क्या वह उसके साथ [इंटरनेट पर] लैंगिक संबंध रखना चाहती है।"

इंस्टंट मैसेज

यह क्या है? एक ऐसी इंटरनेट सेवा, जिससे दो या ज़्यादा लोग एक-दूसरे को फौरन संदेश भेजकर बातें करते हैं।

क्यों लुभाता बच्चों का मन? इंस्टंट मैसेज में एक नौजवान अपने दोस्तों की एक सूची बनाता है, जिसमें से वह किसी से भी बातचीत करने का चुनाव कर सकता है। इसलिए इसमें कोई ताज्जुब नहीं कि कनाडा में लिए गए एक सर्वे के मुताबिक, 16 और 17 साल के 84 प्रतिशत नौजवान इंस्टंट मैसेज के ज़रिए अपने दोस्तों से बातचीत करते हैं। और वे इसमें हर दिन एक से भी ज़्यादा घंटे बिता देते हैं।

खतरों से रहिए खबरदार! इंस्टंट मैसेज के ज़रिए होनेवाली बातचीत, आपके बच्चे की पढ़ाई या किसी ऐसे काम में अड़ंगा डाल सकती है, जो उसे पूरा मन लगाकर करने की ज़रूरत है। और फिर यह पता लगाना भी मुश्किल है कि आपका बेटा या बेटी किससे बातें कर रहा/रही है। क्योंकि इंस्टंट मैसेज के ज़रिए होनेवाली बातचीत किसी को सुनायी नहीं देती।

ब्लौग

यह क्या है? एक ऐसी वेब साइट जो एक डायरी का काम करती है।

क्यों लुभाता बच्चों का मन? ब्लौग में नौजवानों को अपने खयालों, दिल की गहराई में छिपे जज़बातों और दूसरे कामों को लिखाई में उतार लेने का पूरा-पूरा मौका मिलता है। ज़्यादातर ब्लौग में लेख पढ़नेवालों के लिए खाली जगह दी होती है, जहाँ वे अपने विचार लिख सकते हैं। बहुत-से बच्चे यह जानकर खुशी से झूम उठते हैं कि किसी ने उनका लेख पढ़कर जवाब दिया है।

खतरों से रहिए खबरदार! ब्लौग में दिए लेख कोई भी पढ़ सकता है। कुछ नौजवान बिना सोचे-समझे ऐसी बातें लिख देते हैं, जिनसे दूसरों को उनके परिवार या स्कूल के बारे में पता चल जाता है। या फिर लोग जान जाते हैं कि वे कहाँ रहते हैं। एक और गौर करने लायक बात यह है कि ब्लौग के ज़रिए लोगों पर कीचड़ उछाला जा सकता है। यहाँ तक कि खुद लेख लिखनेवालों की इज़्ज़त मिट्टी में मिल सकती है। इससे एक इंसान का भविष्य खतरे में पड़ सकता है। क्योंकि कुछ कंपनियों के मालिक किसी को नौकरी पर रखने से पहले उसका ब्लौग पढ़ते हैं।

■ **“माता-पिता की नज़रों में वेबकैम (कंप्यूटर से जुड़ा वीडियो कैमरा) शायद एक सस्ता और आसान ज़रिया हो, जिससे उनके बच्चे रिश्तेदारों और दोस्तों से बात कर सकते हैं। लेकिन इसी वेबकैम का इस्तेमाल करके बदचलन लोग मासूम बच्चों को अपनी हवस का शिकार बना सकते हैं।”**
—रॉबर्ट एस. म्यूलर, फेड्रल ब्यूरो ऑफ इनवेस्टिगेशन (एफ.बी.आई.) के निदेशक

ऑनलाइन सोशल नेटवर्क

यह क्या है? ऐसी वेब साइट जिस पर नौजवान एक वेब पेज बना सकते हैं। साथ ही, वेब पेज को और भी खूबसूरत बनाने के लिए वे उसमें तसवीरें डाल सकते हैं, वीडियो और ब्लॉग शामिल कर सकते हैं।

क्यों लुभाता बच्चों का मन? वेब पेज बनाने और उसे निखारने से एक नौजवान को अपनी शख्सियत ज़ाहिर करने का मौका मिलता है। ऑनलाइन सोशल नेटवर्क के ज़रिए नौजवान बहुत-से नए “दोस्त” बना पाते हैं।

खतरों से रहिए खबरदार! जोएना नाम की एक लड़की कहती है: “सोशल नेटवर्क पर जाना, किसी पार्टी में जाने के बराबर है। और इस पार्टी में कुछ भयानक किस्म के लोग भी आते हैं।” सोशल नेटवर्क में जो निजी जानकारी दी जाती है, उसका बेईमान और धोखेबाज़ लोग गलत इस्तेमाल कर सकते हैं। इसलिए पैरी अफताब (इंटरनेट का सावधानी से इस्तेमाल करने पर खोजबीन करनेवाली जानकार) कहती हैं कि ऐसी वेब साइटें, बच्चों को अपनी हवस का शिकार बनानेवालों के लिए अड्डा हैं।

इसके अलावा, इंटरनेट पर की जानेवाली दोस्ती खोखली होती है। कुछ नौजवान इंटरनेट पर हर ऐरे-गैरे से दोस्ती कर लेते हैं। इस तरह, वे अपने वेब पेज पर दोस्तों की एक लंबी सूची बनाते हैं। वे ऐसा सिर्फ इसलिए करते हैं, क्योंकि वे अपनी साइट पर आनेवाले लोगों पर अपना सिक्का जमाना चाहते हैं। कैनडिस कैलसी अपनी किताब *‘माइस्पेस’ की पीढ़ी* (अँग्रेज़ी) में कहती हैं: “जिस तरह लोग किसी भी कंपनी पर अपना पैसा लगाने से पहले यह देखते हैं कि शेयर बाज़ार में उसकी कितनी कीमत है, उसी तरह आजकल के बच्चे किसी से भी दोस्ती करने से पहले यह देखते हैं कि उसे कितने लोग पसंद करते हैं।”* वे आगे कहती हैं: “जब बच्चे सट्टेबाज़ी की तरह दोस्ती करना सीखते हैं, तो उनमें इंसानियत खत्म हो जाती है। साथ ही, उन पर इस बात का ज़बरदस्त दबाव पड़ता है कि वे खुद को ऐसे पेश करें कि उन्हें ज़्यादा दोस्त मिल सकें।” इसलिए *आखिर आपके बच्चे इंटरनेट पर कर क्या रहे हैं?* किताब एक वाजिब सवाल पूछती है: “आप अपने बच्चों को यह कैसे समझा सकते हैं कि उन्हें अपने अंदर हमदर्दी और करुणा का गुण बढ़ाने की ज़रूरत है, जबकि इंटरनेट की दुनिया सिखाती है कि पहले लोगों से दोस्ती करो और फिर उन्हें रद्दी समझकर फेंक दो?”

* ‘माइस्पेस’ एक बहुत ही मशहूर ऑनलाइन सोशल नेटवर्क का नाम है।

ये तो सिर्फ ऐसी छः इंटरनेट सेवाएँ हैं, जिनका जादू आज बच्चों के सिर चढ़कर बोलता है। अगर आप एक माँ या पिता हैं, तो आप अपने बच्चों को इंटरनेट के खतरों से कैसे बचा सकते हैं?

इंटरनेट की दुनिया में नन्हे कदम

माता-पिता क्या कर सकते हैं?

माता-पिता होने के नाते, आपको किस बात से ज़्यादा घबराहट होगी, इस बात से कि आपके बच्चे के पास गाड़ी की चाबी है या इससे कि वह बेरोकटोक इंटरनेट का इस्तेमाल कर सकता है? देखा जाए तो इन दोनों बातों में कुछ खतरे शामिल हैं। साथ ही, गाड़ी चलाने और इंटरनेट इस्तेमाल करने में समझ-बूझ से काम लेने की ज़रूरत होती है। माता-पिता अपने बच्चों को गाड़ी चलाने से तो हमेशा नहीं रोक सकते, लेकिन वे इस बात का ध्यान *ज़रूर रख सकते हैं* कि उनके बच्चे सावधानी से गाड़ी चलाना सीखें। उसी तरह, कई माँ-बाप अपने बच्चों को इंटरनेट का सावधानी से इस्तेमाल करना सिखाते हैं। इसी सिलसिले में आगे दिए बाइबल के सिद्धांत काफी मददगार साबित होंगे।

"सब चतुर तो ज्ञान से काम करते हैं।" (नीतिवचन 13:16) जो बच्चे इंटरनेट इस्तेमाल करते हैं, उनके माता-पिताओं को इंटरनेट के बारे में बुनियादी जानकारी होनी चाहिए। साथ ही, उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि उनके बच्चे इंस्टंट मैसेज, वेब पेज, या फिर दूसरी इंटरनेट सेवाओं का कैसे इस्तेमाल कर रहे हैं। दो बच्चों की माँ मारशे कहती है: "यह मत सोचिए कि आपकी सीखने की उम्र पार हो चुकी है या आपमें इतना ज्ञान नहीं कि आप इंटरनेट के बारे में सीख सकें। इसके बजाय, टेकनॉलजी के बारे में ताज़ा-तरीन जानकारी रखने की कोशिश कीजिए।"

'तू अपने घर की छत पर आड़ के लिए मुण्डेर बनाना, ताकि उस पर से कोई न गिरे।' (व्यवस्थाविवरण 22:8) इंटरनेट सेवा उपलब्ध करानेवाली कंपनियाँ शायद ऐसा इंतज़ाम करने की पेशकश करें, जो 'मुण्डेर' का काम करता है। यानी, यह इंतज़ाम गलत किस्म के संदेश या तसवीरों को स्क्रीन पर आने से रोकता है। यही नहीं, यह लोगों को खतरनाक वेब साइटों पर जाने से भी रोकता है। इस तरह की सुविधा, कुछ कंप्यूटर प्रोग्राम में भी पायी जाती है। और-तो-और, कुछ प्रोग्राम ऐसे हैं, जो बच्चों को अपनी निजी जानकारी, जैसे नाम और पता देने से रोकते हैं। मगर फिर भी, यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि ऐसे प्रोग्राम सभी गलत किस्म की जानकारी को कंप्यूटर स्क्रीन पर आने से नहीं रोकते। और हाँ, कई नौजवान जो कंप्यूटर के मामले में माहिर होते हैं, वे इस तरह के प्रोग्रामों को चकमा देना सीख जाते हैं।

"जो अपने आप को दूसरों से अलग करता है, वह अपनी ही लालसा पूरी करना चाहता है। वह सब प्रकार की खरी बुद्धि से बैर करता है।" (नीतिवचन 18:1, *NHT*) संयुक्त राज्य में किए गए एक अध्ययन के मुताबिक, 9 से 19 साल के लगभग 20 प्रतिशत बच्चों के सोने के कमरे में कंप्यूटर है, जिसके ज़रिए वे इंटरनेट पर जाते हैं। अगर कंप्यूटर घर की बैठक या खुली जगह में रखा जाए, तो अच्छा होगा। इससे माता-पिता अपने बच्चों पर नज़र रख पाएँगे कि वे इंटरनेट पर क्या कर रहे हैं। वे बच्चों को खतरनाक साइटों पर जाने से भी रोक पाएँगे।

"ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियों की नाईं नहीं पर बुद्धिमानों की नाईं चलो। और अवसर [यानी समय] को बहुमोल समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं।" (इफिसियों 5:15, 16) तय कीजिए कि आपके बच्चे कब और कितनी देर इंटरनेट इस्तेमाल कर सकते हैं। और यह भी कि वे किस तरह की साइटों पर जा सकते हैं और किस तरह की साइटों पर नहीं। आप जो नियम बनाते हैं, उनके बारे में अपने बच्चों के साथ चर्चा कीजिए और उन्हें इस तरह समझाइए कि वे नियम उनके मन में बैठ जाएँ।

बेशक, जब बच्चे घर से बाहर होते हैं, तो आप माता-पिता उन पर नज़र नहीं रख सकते। इसलिए यह ज़रूरी है कि आप अपने बच्चों को अच्छे उसूल सिखाएँ, ताकि वे आपकी गैर-हाज़िरी में भी सही चुनाव कर सकें।* (फिलिप्पियों 2:12) अपने बच्चों को साफ-साफ बताइए कि अगर वे इंटरनेट इस्तेमाल करने के बारे में बनाए आपके नियम तोड़ेंगे, तो उन्हें क्या सज़ा मिलेगी। फिर ये नियम लागू कीजिए।

---

* माता-पिताओं को याद रखना चाहिए कि बहुत-से नौजवान मोबाइल फोन, वीडियो गेम की मशीनों वगैरह के ज़रिए भी इंटरनेट का इस्तेमाल कर सकते हैं।

■ **संयुक्त राज्य में, 9 से 19 साल के 57 प्रतिशत बच्चे, जो हफ्ते में एक बार इंटरनेट इस्तेमाल करते हैं, पोर्नोग्राफी की साइटों पर गए हैं। लेकिन सिर्फ 16 प्रतिशत बच्चों के माता-पिताओं को इस बात की खबर है**

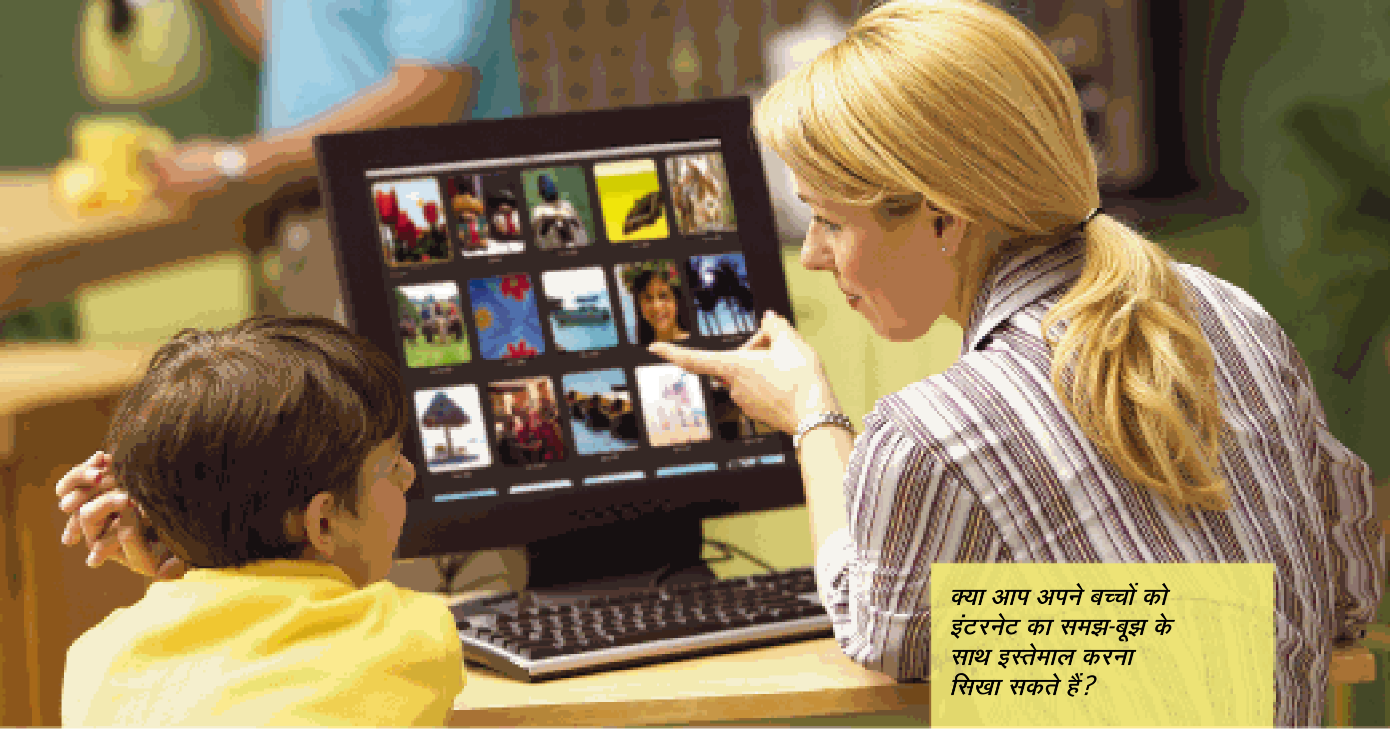

क्या आप अपने बच्चों को इंटरनेट का समझ-बूझ के साथ इस्तेमाल करना सिखा सकते हैं?

"[एक अच्छी माँ] अपनी गृहस्थी के सब मामलों पर ध्यान रखती [है]।" (नीतिवचन 31:27, *NHT*) जब भी आपके बच्चे इंटरनेट इस्तेमाल करते हैं, उन पर नज़र रखिए और इस बारे में उन्हें पहले से बताकर रखिए। ऐसा करना, उनकी निजी बातों में दखल देना नहीं है। आखिर, इंटरनेट एक ऐसी जगह है जहाँ सभी लोग अपनी-अपनी राय देने के लिए इकट्ठा होते हैं। अमरीका के 'फेड्रल ब्यूरो ऑफ इनवेस्टिगेशन' (एफ.बी.आई.) यह सुझाव देता है कि माता-पिताओं को अपने बच्चों के इंटरनेट अकाउंट के बारे में पता होना चाहिए, उन्हें समय-समय पर बच्चों के ई-मेल की जाँच करनी चाहिए और यह भी कि वे किन वेब साइटों पर गए हैं।

"विवेक ["सोचने-समझने की काबिलीयत," *NW*] तुझे सुरक्षित रखेगा; और समझ तेरी रक्षक होगी; ताकि तुझे बुराई के मार्ग से, और उलट फेर की बातों के कहनेवालों से बचाए।" (नीतिवचन 2:11, 12) इंटरनेट के खतरों से अपने बच्चों की हिफाज़त करने के लिए, सिर्फ उन पर नज़र रखना काफी नहीं। आपको उन्हें अच्छे उसूल सिखाने और खुद एक बढ़िया मिसाल रखने की भी ज़रूरत है। इसलिए वक्त निकालकर अपने बच्चों के साथ इंटरनेट के खतरों के बारे में चर्चा कीजिए। *बच्चों से खुलकर बातचीत करना, उन्हें इंटरनेट के खतरों से बचाने का सबसे बेहतरीन तरीका है।* टॉम नाम का पिता, जो एक मसीही भी है, कहता है: "हमने अपने दोनों बेटों को बताया कि इंटरनेट पर कैसे-कैसे 'बुरे' लोग आते हैं। हमने उन्हें यह भी बताया कि पोर्नोग्राफी क्या है और इससे उन्हें क्यों दूर रहना चाहिए। और यह भी कि उन्हें क्यों कभी किसी अजनबी से बात नहीं करनी चाहिए।"

आप अपने बच्चों की हिफाज़त कर सकते हैं

इंटरनेट के खतरों से अपने बच्चों की हिफाज़त करना, बड़ी मेहनत का काम है। और-तो-और, मीडिया से जानकारी हासिल करने के तरीके भी लगातार बदल रहे हैं। आज टेक्नॉलजी की बदौलत जो नए-नए उपकरण बनते हैं, उनके कई अनोखे फायदे हो सकते हैं। मगर ये अपने साथ बच्चों के लिए ढेरों खतरे भी लेकर आते हैं। तो फिर, माता-पिता अपने बच्चों को इन खतरों से बचने के लिए कैसे तैयार कर सकते हैं? बाइबल कहती है: 'बुद्धि रक्षा करती है।'—सभोपदेशक 7:12, *ईज़ी-टू-रीड वर्शन।*

अपने बच्चों को बुद्धिमान बनना सिखाइए। साथ ही, उन्हें यह समझने में मदद दीजिए कि वे कैसे इंटरनेट का सही इस्तेमाल कर सकते हैं और उसके खतरों से दूर रह सकते हैं। इस तरह इंटरनेट आपके बच्चों के लिए एक अभिशाप नहीं, बल्कि वरदान साबित होगा।

- **विशेषज्ञों का मानना है कि हर दिन तकरीबन 7,50,000 बदचलन लोग चैट रूम और डेटिंग सेवाओं में ऐसे बच्चों की खोज करते हैं, जिन्हें वे अपनी हवस का शिकार बना सकते हैं**

- **अमरीका में 12 से 17 साल के 93 प्रतिशत नौजवान इंटरनेट इस्तेमाल करते हैं**